14

इज़्माउस को जाने वाला मार्ग

(लूका 24:13-36)

बचपन में मुझे बिंग क्रोसबी और बॉब होप की ''रोड'' के नाम वाली ''रोड टू ज़ंज़ीबर'' (1941), ''रोड टू मोरक्को'' (1942), ''रोड टू बली'' (1952) तथा अन्यों फिल्में बहुत पसन्द थीं। लूका 24 अध्याय में बाइबल में भी एक ''रोड (अर्थात मार्ग) की कहानी'' है।[1] परन्तु लूका 24 अध्याय वाली कहानी उन फिल्मों की कहानियों की तरह हंसाने वाली नहीं। बल्कि यह दिल को छू लेने वाली एक शानदार कहानी है, जिसके ज़बर्दस्त आत्मिक अर्थ थे।

इस अध्याय में दी गई आयतों में से जो संदेश मैं समझाना चाहता हूं, वह आयत 21 में मिलता है, जब क्लियोपास और उसके साथी ने कहा था, ''परन्तु *हमें यह आशा थी*[2] कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा।'' इस आयत का संदेश *आशा* का है। इस पाठ में हम आशा को बुझते और फिर जगमगाते हुए देखेंगे।

आशा बुझाई गई (लूका 24:13, 14)

जी उठने के लूका के वृत्तांत का अध्ययन करते हुए हम उन स्त्रियों के विषय में पढ़ते हैं, जिन्होंने सप्ताह के पहले दिन कब्र पर आकर स्वर्गदूतों को देखा था (आयतें 1-7)। हमें पता चलता है कि उन स्त्रियों द्वारा ''ग्यारहों को और अन्य सब को'' (आयत 9) बताने पर पतरस भाग कर कब्र की ओर गया और उसे कब्र खाली मिली (आयत 12)। आयत 13 से पहले, यीशु के जी उठने के बाद दर्शन की बात नहीं मिलती।[3] यह पहला दर्शन है।

कहानी आरम्भ होती है, ''देखो, उसी दिन उन में से दो जन इम्माउस नामक एक गांव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से कोई सात मील की दूरी पर था'' (आयत 13)। यह उसी दिन की बात है, जब स्त्रियों ने खाली कब्र को देखा था। ''उनमें से दो जन'' शब्दों से पता चलता है कि ये आयत 9 वाले ''अन्य सब'' प्रेरितों के विशाल समूह में से दो थे। एक का नाम क्लियोपास था (आयत 18),[4] जबकि दूसरे का नाम नहीं दिया गया है। शायद यह क्लियोपास की पत्नी थी।[5] वे दोनों यरूशलेम से इम्माउस नामक छोटे से गांव[6] में घर जा रहे थे।[7]

''घर जा रहे थे'' शब्द कितने विशेष हैं। मैं जब घर से दूर होता हूं तो दिन गिनता रहता हूं कि घर जाने में कितने दिन रह गए हैं।[8] हम दोनों के प्रसन्न होने की उम्मीद कर सकते हैं। बसन्त के सुहाने मौसम में, हरी-हरी घास थी, पौधों की कोंपलें फूट रही थीं, फूल खिल रहे थे और पक्षी चहचहा रहे थे। पर दोनों में से किसी ने भी इनकी ओर नहीं देखा। धीरे-धीरे चलते हुए उनकी गालों पर बहे आंसू सूख चुके थे;[9] वे एक जनाज़े से होकर घर लौट रहे थे। आप में से कई इस मार्ग पर गए हैं, जो लाखों-करोड़ों पदचिह्नों से अरबों-खरबों आंसुओं से तर है, परन्तु वे किसी प्रियजन के ही नहीं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के जनाज़े से होकर घर जा रहे थे, जिसमें उनकी

आशा और विश्वास था यानी वे यीशु के जनाज़े से घर लौट रहे थे। इसीलिए धीरे-धीरे और उदास से चले जा रहे थे।

''तो उन सब बातों के बारे में जो हुई थीं, परस्पर बातचीत करते थे'' (आयत 14)। ''सब'' शब्द पर ध्यान दें। वे केवल यीशु की मृत्यु की ही बातें नहीं कर रहे थे; बल्कि कब्र से लौट कर आई स्त्रियों द्वारा उलझन में डालने वाली बातें और उस सच्चाई पर भी चर्चा कर रहे थे कि पतरस और यूहन्ना को कब्र खाली मिली थी। आयत 15 कहती है कि ''जब वे आपस में बातचीत और पूछताछ कर रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उन के साथ हो लिया,'' और आयत 17 में लिखा है कि वे ''आपस में '[बातें]' करते'' थे। मूलत: धर्म शास्त्र में यह कहा गया है कि वे गेंद फैंकने की तरह एक-दूसरे की ओर बातें फेंक रहे थे। वे बातचीत तथा विचार-विमर्श करते, चर्चा एवं सोच-विचार करते, चिंतन और ध्यान लगाते थे। उनकी बातचीत घूम फिर कर वहीं आ जाती थी, पर किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचती थी।

हम में से कई लोग इसी मार्ग पर चले हैं। हमें दु:ख और अकेलापन लगा है। हमने लगा कि परमेश्वर यदि जीवित होता तो हम से दूर न होता। हम उलझन में पड़े, शंकित हैं और हमारे मनों की आशा बुझ गई। इसके अलावा जितना हमने समझने की कोशिश की उतना ही इम्माउस की ओर जाने वाले मार्ग पर चलते हुए उलझ गए। उन दोनों चेलों की तरह हम लड़खड़ाते हुए चले हैं।

आशा फिर से जगी (लूका 24:15-17)

''और जब वे बातचीत और पूछताछ कर रहे थे तो यीशु आप पास आकर साथ हो लिया'' (आयत 15)। धीरे-धीरे चलते हुए उन्हें अपने पीछे किसी के पैरों की आहट सुनाई दी। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा होगा कि कोई अपरिचित व्यक्ति आ रहा है, जिस कारण वे थोड़ा तेज़ चलने लगे। पर वह अजनबी उनके साथ हो कर चलने लगा।

आयत 16 कहती है, ''परन्तु उन की आंखें ऐसी बन्द कर दी गई थीं कि उसे पहचान न सकें।'' मूलत: ''उनकी आंखें उसे जानने से रोकने के लिए *बन्द कर* दी गईं।''[10] पता नहीं उन्होंने यीशु को क्यों नहीं पहचाना। शायद ''रोकने के लिए'' शब्दों से ''ईश्वरीय हस्तक्षेप'' का संकेत मिलता है। परमेश्वर ने जान-बूझकर उचित समय आने तक उनके लिए यीशु को पहचानना असम्भव कर दिया होगा (देखें आयत 31)।

एक और सम्भावना है कि उन्होंने यीशु को इसलिए नहीं पहचाना होगा, क्योंकि जी उठने के बाद उसकी देह पहले वाली देह से भिन्न थी। मरकुस ने लिखा है कि ''इसके बाद वह *दूसरे रूप में* उनमें से दो को जब वे गांव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया'' (मरकुस 16:12)। हम जानते हैं कि जी उठी उसकी देह पहले वाली देह से भिन्न थी (1 कुरिन्थियों 15:44)। उदाहरण के लिए जी उठी देह से यीशु बन्द दरवाज़ों में से भी जा सकता था। हमें यह भी पता है कि आरम्भ में कब्र पर मरियम और गलील की झील पर चेलों जैसे लोगों ने नहीं पहचाना था कि यीशु कौन है (यूहन्ना 20:14; 21:4; मत्ती 28:17)।[11] इसी से पता चलता है कि ये दोनों चेले प्रभु यीशु को क्यों नहीं पहचान पाए।

मुझे लगता है कि कुछ समस्या इन दोनों चेलों की भी अवश्य थी। वे कब्र, उस पर लगे बड़े पत्थर और लाल रोमी मुहर में इतने खो गए थे कि उन्हें जी उठा प्रभु दिखाई ही नहीं दिया। यीशु

ने अपने पीछे चलने वालों को बार-बार अपनी मृत्यु और उसके पश्चात जी उठने की बातें बताई थीं।[12] उदाहरण के लिए, रूपान्तर पर्वत से नीचे उतरते यीशु ने अपने चेलों को कहा था, ''जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना'' (मत्ती 17:9)। बाद में इसी अध्याय में उसने उन्हें बताया कि ''मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा'' (मत्ती 17:22, 23)। अन्य शब्दों में, यीशु वहीं था जहां उस ने कहा कि वह अपने ईश्वरीय कार्यक्रम में होना था। परन्तु पूर्वधारणा समझ की आंखें बन्द कर सकती है (मत्ती 13:15)। चेलों की मसीहा की मृत्यु के ढंग को समझने की अयोग्यता उन्हें यह जानने में एक बड़ी ''रुकावट'' होगी कि यही यीशु है।

उनके उसे न पहचानने का कारण जो भी रहा हो,[13] यीशु उनकी आंखें खोलकर उनकी समझ चमकाने को था। ''उस ने उनसे पूछा; ये क्या बातें हैं, जो तुम चलते-चलते आपस में करते हो? वे उदास से खड़े रह गए'' (आयत 17)। यीशु की बात ने उन्हें उनके मार्ग में ही रोक दिया। शायद पल भर के लिए वह उन्हें बुरा लगा। शोक को मन ही समझ सकता है। हम में से अनेक लोगों को परेशान होने पर अपरिचित लोगों से बात करना अच्छा नहीं लगता।

परन्तु क्लियोपास ने अन्ततः उत्तर दिया, ''क्या तू यरूशलेम में अकेला परदेशी है जो नहीं जानता, कि इन दिनों में उस में क्या क्या हुआ है?'' (आयत 18)। उसके शब्दों में थोड़ी सी डांट थी, जो इस बात का संकेत था कि अजनबी को भी पता होना चाहिए कि उन दिनों देश में क्या हुआ है! ''यह घटना ... कोने में नहीं हुई [थी]'' (प्रेरितों 26:26)। क्लियोपास को विश्वास नहीं हुआ कि उनके पास खड़ा आदमी वहां होने वाली सब बातों से अनजान हो।

परन्तु यीशु ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। इसके विपरीत उसने धीरे से पूछा, ''कौन सी बातें?'' (आयत 19)। ''उन्होंने उस से कहा; यीशु नासरी के विषय में[14] जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट का काम वचन में सामर्थी भविष्यवक्ता था'' (आयत 19)। चेलों के विश्वास के स्तर पर ध्यान दें। उनका विश्वास था कि यीशु मूसा जैसा कोई नबी था (तुलना करें प्रेरितों 3:22; 7:37)। उनका विश्वास था कि वह वचन और कर्म में सामर्थी था; उन्होंने उसके आश्चर्यकर्म यानी अद्‌भुत काम देखे थे और उसकी शिक्षा सुनी थी। परन्तु उनका विश्वास डगमगा गया। वे यीशु को पूरी तरह से नहीं समझ पाए थे कि वह सब कुछ कर सकता था।

क्लियोपास ने ''अपरिचित,'' ''अजनबी'' को बताना जारी रखा कि ''महायाजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वा दिया, कि उस पर मृत्यु की आज्ञा दी जाए; और उसे क्रूस पर चढ़वाया'' (आयत 20)।[15] फिर उसने दुःखी होते हुए कहा, ''परन्तु हमें आशा थी, कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा'' (आयत 21)। शायद क्लियोपास और उसका साथी भीड़ में थे, जिसने यरूशलेम में यीशु के विजयोत्सव के दौरान एक सप्ताह पहले ''होशन्ना!'' के नारे लगाए थे। उम्मीदें बहुत बढ़ गई थीं, पर वे मिट्टी में मिल गईं। ''इस्राएल को छुटकारा'' शब्द का अर्थ आत्मिक छुटकारा नहीं, बल्कि शारीरिक छुटकारा था। उनकी उम्मीद यह थी कि मसीहा पूरी शक्ति से रोमियों का नाश करने और इस्राएल को बचाने के लिए आएगा। उनकी उम्मीद खत्म हो चुकी थी।

शायद हमारी उम्मीदें भी मिट्टी में मिल गई थीं। हमें उम्मीद थी कि यह या वह होगा-शायद यही होने की उम्मीद लगाए बैठे थे। फिर कुछ भी नहीं हुआ और हम निराश हो कर रह गए।

मैं क्लियोपास के आगे बढ़ने से पहले अपना सिर हिलाने की कल्पना कर सकता हूं: ''और इन सब बातों के बिना इस दृश्य को बीते आज तीसरा दिन था'' (आयत 21)। ''तीसरा दिन'' वाक्यांश पढ़ना आपके और हमारे लिए विशेष अर्थ रखता है। ''तीसरा दिन यानी वही दिन जिसमें यीशु ने कहा था कि वह मरे हुओं में से जी उठेगा!''[16] परन्तु क्लियोपास के कहने का अर्थ यह नहीं था। वह तो कह रहा था कि ''यीशु को मरे हुए *काफी समय* हो चुका है। हम सोच रहे थे कि कुछ होगा; पर कुछ भी नहीं हुआ। अब *तीसरा दिन* हो चला है, बल्कि शाम भी हो गई है, पर अभी तक कुछ नहीं हुआ। सो हम घर जा रहे हैं।''

जब हमारी वह समझ नहीं होती जो होनी चाहिए तो हमारा दृष्टिकोण अस्पष्ट हो जाता है और उम्मीद खत्म हो जाती है।

दोनों चेले निराश ही नहीं, हताश होकर पस्त हो गए थे; वे उलझन में भी थे। क्लियोपास ने अपनी उलझन इन शब्दों में व्यक्त की:

> और हम में से कई स्त्रियों ने भी हमें आश्चर्य में डाल दिया है जो भोर को कब्र पर गई थीं। और जब उसकी देह न मिली तो यह कहती हुई आईं कि हमने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया, जिन्होंने कहा कि वह जीवित है (आयतें 22, 23)।

आयत 11 में कहा गया है कि जब स्त्रियों ने ''उन ग्यारह ... और अन्य सब'' (आयत 8) को जाकर आप बीती सुनाई तो उनकी बातें उन्हें कहानी सी लगीं, इसलिए उन्होंने उनकी बातों को सत्य नहीं माना। अर्थात उनकी वे बातें उन स्त्रियों की बातों के समान मनघढ़ंत बातें लगीं।

आज विश्वास न करने वाले लोग कहते हैं कि चेले सीधे लोग थे, जो जी उठने की किसी बात पर विश्वास करने के लिए तैयार थे। सत्य तो यह है कि चेलों को प्रभु के जी उठने का ख्याल तक नहीं था, और उन्हें विश्वास दिलाने के लिए सशक्त प्रमाण दिया गया।

क्लियोपास ने अपनी व्याख्या इस प्रकार पूरी की: ''तब हमारे साथियों में से कई एक कब्र पर गए और जैसा स्त्रियों ने कहा था; वैसा ही पाया; परन्तु उसको न देखा'' (आयत 24)। यह पतरस और यूहन्ना की बात है (लूका 24:12; यूहन्ना 20:1–10)। कब्र खाली थी। यीशु की देह गायब हो गई थी और उन्हें मालूम नहीं था कि उसका क्या हुआ। परन्तु उन्होंने फिर भी इस प्रमाण पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि इससे वे उलझ गए।[17]

यीशु ने बड़े धीरज से उनकी बातें सुनी थीं। अब वह बोला। पहले तो क्लियोपास और उसके साथी के होश उड़ गए होंगे: ''तब उसने उनसे कहा; हे निर्बुद्धियो,[18] और भविष्यवक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो!'' (आयत 25)। यूनानी के चार शब्दों का अर्थ है मूर्ख। यीशु द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द सबसे निर्बल और सबसे कम ठोकर लगाने वाला है। अंग्रेज़ी बाइबल के एक अनुवाद दि न्यू इंग्लिश बाइबल में ''तुम कितने नासमझ हो'' है। एक अनुवाद[19] ''तुम कितने बुद्धू हो'' है। यीशु के शब्दों का अनुवाद कैसे भी किया जाए, परन्तु उसकी प्रशंसा वाला कतई नहीं था।

मुझे लगता है कि यीशु की ये बातें कठोरता से कही गई होंगी। मैं उनको कोमलता से भरे हुए गले से कहने की कल्पना करता हूं। इन चेलों को बल्कि सब चेलों को मसीह और उसके मिशन

को समझने का हर सम्भव अवसर दिया गया था। नबियों ने मनुष्य जाति के लिए मसीह के दु:ख उठाने की आवश्यकता को बड़े स्पष्ट ढंग से बताया था। बहुत पहले उत्पत्ति 3:15 में मसीह के विषय में पहली भविष्यवाणी में कहा गया था कि उसके लिए शैतान की शक्ति को कम करना आवश्यक होगा। भजन संहिता 22 उसके हाथों और पांवों के छेदे जाने की चर्चा करता है (आयत 16) और क्रूस पर यीशु के कटे शब्दों से आरम्भ होता है: ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (आयत 1)। यशायाह 53 पूरी तरह दु:खी दास की धारणा पर केन्द्रित है। आयत 5 में कहा गया है कि ''वह हमारे अपराधों के लिए घायल किया गया, हमारे दुष्कर्मों के कारण कुचला गया।''

चेलों की उलझन यीशु के ''सब'' शब्द के इस्तेमाल से रेखांकित की गई है: ''हे निर्बुद्धियो, और भविष्यवक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो।'' चेलों का विश्वास था कि नबियों की बताई गई कुछेक बातें हैं; वे मसीह के राजा और अधिकारी के रूप में प्रयुक्त भागों को पसन्द करते थे। पर उन्हें मसीह के दु:खों की भविष्यवाणियों वाली बातें पसन्द नहीं थीं। वे उस बात के दोषी थे, जिसे बर्टन कॉफमैन ने ''काटना और चिपकाना'' कहा है।[20]

आज बहुत से लोग परमेश्वर के वचन के लिए ''काटना और चिपकाना'' का ढंग अपनाते हैं। वे परमेश्वर के प्रेम सम्बन्धी बात चाहते हैं। उन्हें प्रेमी परमेश्वर का विचार प्रिय है, पर उससे डरने की धारणा से ही वे परेशान हो जाते हैं। वे अनन्त नरक की अवधारणा को फैंक देते हैं। यीशु ने कहा कि वास्तव में यदि परमेश्वर की कही हुई सारी बातों को स्वीकार नहीं करते तो भी हम ''मूर्ख और विश्वास में सुस्त'' हैं।

यीशु ने आगे कहा, ''क्या अवश्य न था, कि मसीह [अर्थात ख्रिस्त[21]] ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?'' (आयत 26)। ''अवश्य'' के लिए यूनानी शब्द *dei* है, जिसका अर्थ है *अत्यावश्यक*। क्रूस उनके लिए विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य के उद्धार के लिए मनुष्य की योजना का *अति महत्वपूर्ण* भाग था।

यह विचार कि मसीह के लिए *दु:ख सहना* आवश्यक था चेलों की भी समझ में नहीं आया। ''दु:ख उठाने वाला मसीहा'' शब्दों में विरोधाभास था। रब्बी लोग दु:ख सहने वाले सेवक और यशायाह 53 जैसे अध्याय को सिखाते समय इन्हें मसीह की महिमा के लिए इस्तेमाल करते थे। परन्तु दु:ख के उदाहरण यहूदी लोगों पर लगाते थे। इसलिए पौलुस ने क्रूस को यहूदियों के लिए ''ठोकर का कारण'' कहा (1 कुरिन्थियों 1:23)। यीशु ने ध्यान दिलाया कि दु:ख और महिमा का एक-दूसरे से गहरा सम्बन्ध है। वास्तव में महिमा का रास्ता दु:ख में से होकर ही था, यानी क्रूस पर चढ़े बिना मुकुट नहीं मिल सकता था।[22]

इन चेलों को विश्वास दिलाने में सहायता करने के लिए यीशु क्या कर सकता था? ''तब उस ने मूसा से और सब भविष्यवक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया'' (आयत 27)। यीशु की उपस्थिति तो आवश्यक थी ही, परन्तु फिर भी उसने पवित्र शास्त्र में से सुनाया। हमें भी ऐसे ही करना चाहिए (रोमियों 10:17)!

उस उपदेश को सुनने के लिए, जिसमें यीशु पूरे पुराने नियम के नियमबद्ध बाइबल अध्ययन के लिए दो चेलों को ले गया; क्या आप वहां नहीं होना चाहेंगे? पुराने नियम किसी रूप या प्रतिरूप में नहीं तीन सौ से अधिक भविष्यवाणियों में स्पष्ट रूप से उसके आने की भविष्यवाणियां

थीं। यीशु ने मूसा द्वारा रचित प्रथम पुस्तक के पहले भाग से प्रारम्भ किया होगा और उन्हें समझाया होगा कि मनुष्य के पाप में गिरने के कारण परमेश्वर ने ''पहले वंश'' की प्रतिज्ञा दी (उत्पत्ति 3:15)। उसने मलाकी तक परेमश्वर के वचनों की ओर ध्यान दिलाया होगा; जिसने मसीह के पहले आने वाले की भविष्यवाणी की थी (मलाकी 3:1)। वह कितना अद्‌भुत उपदेश होगा!

संयोगवश, आपको कैसे लगता है कि यीशु ने क्या किया होगा? क्या उसने यह कहा, ''मेरे थैले में मेरी बाइबल है, पर उस पर निशान लगे हैं और आसनी से ढूंढ़े जा सकते हैं। आप अपनी बाइबल निकालें और चलते-चलते मैं आपको उसके प्रसंग बताऊंगा। अब उत्पत्ति 3:15 निकालें ...''? आप को पता है कि उसने ऐसे नहीं कहा। आम लोगों के पास अपनी बाइबल नहीं, बल्कि इसका कोई भाग होता था।[23] यीशु इन यात्रियों को यात्रा में पवित्र बाइबल में से बता पाया, क्योंकि बाइबल उसके मन में थी। उसने बाइबल पढ़कर याद की हुई थी।[24] इसके अलावा दोनों चेले भी बाइबल से परिचित होंगे, जिसके कारण उन्हें पता चल गया कि अजनबी सही कह रहा था। मैं उन्हें सिर हिलाते, यह कहते हुए देख सकता हूं, ''बिल्कुल सही! इसका अर्थ पूरी तरह यही है! हमने तो पहले इस प्रकार सोचा ही नहीं था!''

यीशु के उन्हें पुराने नियम की सैर कराने से, उनके मनों में उम्मीद जग गई। ध्यान दें कि उन्होंने बाद में कहा, ''जब वह मार्ग में हमसे बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?'' (आयत 32)। वह छोटी सी चिंगारी जो लगभग बुझ ही गई थी, फिर से जलने लगी। जो कुछ हुआ था, वह सब उन्हें समझ आने लगा। बाइबल में बताया गया था कि क्रूस पराजय का प्रमाण नहीं था, बल्कि विजय की प्रतिज्ञा का प्रमाणित होना था। इसके अलावा वचन में यह सिखाया गया है कि मसीह के मरने के बाद मसीहा का जी उठना होना था। उम्मीद फिर से जग गई।

आशा पहचानी गई (लूका 24:28-32)

यीशु के इन दोनों चेलों को पवित्र शास्त्र में से अचानक अहसास हुआ कि वे घर के पास पहुंच गए हैं। ''इतने में वे उस गांव के पास पहुंचे, जहां वे जा रहे थे'' (आयत 28)। अत: कोई संदेह नहीं कि वे आश्चर्यचकित रह गए कि बातें करते हुए उन्हें समय का पता ही नहीं चला।

''वह [यीशु] आगे बढ़ना चाहता है'' (आयत 28)। यीशु उनके साथ कोई चाल नहीं चल रहा था। उनके साथ उसका व्यवहार सभी परिस्थितियों में एक समान था। यीशु ने कभी किसी के साथ ज्यादती नहीं की। यदि ये चेले उसे कहने के लिए ज़ोर नहीं देते तो उसने नहीं कहना था। इस कहानी का महत्वपूर्ण भाग है। यदि यीशु आगे निकल जाता तो इन दोनों चेलों को कभी यह पता नहीं चलना था कि उन्होंने मृतकों में से जी उठे प्रभु को देखा है![25] (ऐसे ही आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना है; परन्तु वह आपके साथ ज़बर्दस्ती नहीं करेगा कि आप उसकी इस योजना को अवश्य ही मानें। निर्णय आपको ही करना है कि आप अपनी इच्छा से अपने जीवन को उसमें मिलाना चाहते हैं या नहीं। यदि आपकी इच्छा नहीं है तो आपको कभी पता नहीं चलेगा कि परमेश्वर ने आपके लिए क्या रखा है!)

''परन्तु उन्होंने यह कहकर उसे रोका, कि हमारे साथ रह; क्योंकि संध्या हो चली है'' (आयत 29)। NIV के अनुवाद में ''उन्होंने उसकी *मिन्नत* की'' है! यदि हम किसी को अपने

साथ ठहराना चाहते हों तो हमें पता होता है कि उसे कैसे मनाना है, है न? दूसरी ओर यदि हम औपचारिकता दिखाते हुए अपना खाना भी बचाना चाहते हैं तब भी हमें पता होता है कि ''कभी आइए न हमारे गरीबखाने में दर्शन दें'' या ''कभी हमारे साथ खाना खाइए'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। ये दोनों चेले दिल से चाहते थे कि यीशु उनके साथ रुके। इसलिए उन्होंने उसकी मिन्नत की कि रात होने को है! सड़क पर बहुत अन्धेरा है और चोरों, डाकुओं तथा जंगली जानवरों का भी खतरा है। इसलिए आज रात आप हमारे साथ ही रहें।

यीशु ने उनकी विनती स्वीकार की ''वह उनके साथ रहने के लिए भीतर गया'' (आयत 29)। यीशु उनके जीवन में आता है, तो उन्हें अन्दर आने के लिए कहते हैं (प्रकाशितवाक्य 3:20)।[26]

''जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा, तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और तोड़कर उनको देने लगा'' (आयत 30)। आमतौर पर खाने पर मेज़बान ही धन्यवाद देकर आगे बढ़ाता था; परन्तु स्पष्ट है कि वे यीशु से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने मेज़बान वाला कर्त्तव्य उसे निभाने के लिए कहा। जो कुछ प्रभु यीशु ने यहां किया, वह पहले भी ऐसा ही किया करता था। पांच हज़ार लोगों को खिलाने, ''तब उसने वे पांच रोटियां और दो मछली लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़ तोड़कर चेलों को देता गया, कि लोगों को परोसें'' (तुलना करें लूका 9:16)। प्रभु भोज की स्थापना को बताने के लिए इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। यीशु के संग चलने वाले इन चेलों ने पहले कई बार प्रभु यीशु को रोटी पर आशीष मांगकर तोड़ते हुए देखा था।

जब यीशु ने धन्यवाद के शब्द कहे तो अचानक उन्हें समझ में आ गया कि वह कौन था? ''तब उनकी आंखें खुल गईं[27] और उन्होंने उसे पहचान लिया'' (आयत 31)। वैसे हमें यह पता नहीं चल सकता कि उन्होंने उसे पहले क्यों नहीं पहचाना; हमें यह भी पता नहीं चल सकता कि अब अचानक उन्होंने ऐसे कैसे पहचान लिया। आयत 35 कहती है, ''तब उन्होंने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्होंने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना।'' सम्भवत: धन्यवाद करने और रोटी देने का उसका ढंग निराला था। शायद प्रार्थना करने का उसका ढंग अद्‌भुत था; उदाहरण के लिए, ''हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए'' (मत्ती 6:9) कहने के बजाय उसने ''मेरा पिता'' कहा (यूहन्ना 10:29)। शायद रोटी हाथ में लेते समय दोनों चेलों ने यीशु के हाथों में कील के निशान देख लिए थे। शायद यीशु के हाथ में रोटी होने के समय परमेश्वर की ओर से अंकुश हटा लिया गया था, ''परन्तु उनकी आंखें ऐसी बन्द कर दी गई थीं, कि उसे पहिचान न सके'' (आयत 16)। विश्वास के साथ तो मैं कुछ नहीं कह सकता; परन्तु यह आवश्यक है कि अचानक उन्हें पता चल गया था कि वह यीशु ही था।[28] किसी प्रकार का संदेह नहीं रह गया था। यीशु जी उठा था।

अगला वाक्य पहले तो बिल्कुल विपरीत लगता है! उनके यीशु को पहचान लेने के उपरान्त उसके लिए उन्हें और निर्देश देने या ढाढ़स देने के लिए उचित समय लगना था। इसके स्थान पर हम पढ़ते हैं, ''और वह उन की आंखों से छिप गया'' (आयत 31)। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह उठकर द्वार से बाहर चला गया, बल्कि इसका अर्थ यह है कि एक पल में वह वहीं था और अगले पल वहां नहीं था यानी वह जा चुका था।

यीशु ने इन दोनों चेलों को छोड़ा नहीं। आयत 36 में हम पढ़ते हैं कि वह आप ही उन के बीच में आ खड़ा हुआ। उस रात जब वे क्लियोपास और उसके साथी इकट्ठे हुए थे। अपितु यीशु अपने

चेलों को एक संदेश भेज रहा था। अपनी मृत्यु से पूर्व वह देह में बन्दी था। वह मानवीय पैरों से चलता; वैसे ही देखता था जैसे हम देखते हैं। अब अपने जी उठे शरीर में वह पत्थर और लकड़ी में से निकल सकता था। वह अपनी इच्छा से प्रकट होकर छिप सकता था। लगता था कि वह अब यही संदेश दे रहा था कि ''मैं अब सीमित नहीं हूं! बल्कि में हर जगह जा सकता हूं, नि:संदेह मैं स्वर्ग में उठा लिया जाऊंगा, परन्तु तुम्हें शक्ति देने और तुम्हारी सहायता करने के लिए हर स्थान पर तुम्हारे साथ हो सकता हूं।'' यह संदेश हम सबके लिए आवश्यक है।

दोनों चेलों के लिए सब कुछ स्पष्ट हो चुका था। ''उन्होंने आपस में कहा; जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई'' (आयत 32)? ''अर्थ खोलता'' शब्द उसी यूनानी शब्द से लिया गया है, जिसका आयत 31 में अनुवाद ''खुल गए'' हुआ है।[29] उनकी आंखें पवित्र शास्त्र के अर्थ खोलने से ही खुलने लगीं।

आशा दोहराई गई (लूका 24:33-36)

इम्माऊस को जाने वाले इन दो चेलों के मनों में जगने वाली आशा ऐसी नहीं थी कि वे उसे अपने तक रखते। यह ऐसी आशा थी कि जिसे दूसरे लोगों को अगले दिन नहीं, बल्कि उसी रात पहुंचाना आवश्यक था। (किसी ने कहा है कि मसीही संदेश जब तक आप बांटते नहीं, यह आपका नहीं होता।) ''वे उसी घड़ी [यानी तुरन्त] उठकर यरूशलेम को लौट गए'' (आयत 33)। प्रभु यीशु द्वारा उन्हें रात के समय यात्रा न करने सम्बन्धी सारे तर्क भूल गए और वे रात भर चलते रहे। अभी वे सात मील ही पैदल आए थे, परन्तु अब वे सत्तर मील का सफर कई घंटों में तय करने के लिए लौट गए।

क्लियोपास और उसके साथी ने ''उन ग्यारह और उनके साथियों को इकट्ठे[30] पाया'' (आयत 33)। रात के दस, ग्यारह या बारह भी बजे हो सकते हैं। पर यरूशलेम में चेलों को समय का पता ही नहीं चला। वे तो अनोखी घटनाओं पर विचार करने के लिए इकट्ठे हुए थे। आयत 34 बताती है कि वे यह चर्चा करते थे कि ''प्रभु सचमुच जी उठा है और शमौन को दिखाई दिया है!''[31] परन्तु मरकुस के वृत्तांत में यह स्पष्ट किया गया है कि अभी सब चेलों ने विश्वास नहीं किया था (मरकुस 16:11, 14)।

इन दो यात्रियों की साक्षी भी जुड़ गई। ''तब उन्होंने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्होंने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना तब उन्होंने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्होंने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना'' (आयत 35)। मैं अनुमान लगा सकता हूं कि कैसे आगे बढ़कर ध्यान से उनकी बातें हर कोई सुन रहा था और कइयों के मुंह से उनके विश्वास का पता चल रहा था; जबकि अन्यों के लिए अभी विश्वास करना कठिन हो रहा था। मरकुस 16:13 कहता है, ''उन्होंने [क्लियोपास और उसके साथी ने] भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उन की भी प्रतीति न की।'' एक बात तो पक्की थी कि क्लियोपास और उसके साथी को विश्वास करने में कोई कठिनाई नहीं थी। उन्होंने प्रभु को पहचान लिया था यानी उन्हें पता था कि वह जी उठा है![32]

उनके बोलते हुए अचानक यीशु आ गया। ''वे ये बातें कह ही रहे थे, कि वह आप ही उन

के बीच में खड़ा हुआ; और उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले'' (आयत 36)। समय अनुमति नहीं देता कि कहानी को जारी रखा जाए। हम उन दो लोगों से, जिन्होंने अपनी मरी हुई आशा से आरम्भ करके जीवित आशा तक पहुंचाया था, इस पाठ को खत्म करते हैं।

सारांश

मुझे नहीं पता कि आपकी आशा तेज़ी से चमक रही है, टिमटिमा रही है या बुझ गई है। यदि इम्माउस को जाने वाले उन चेलों की तरह आपकी आशा लगभग मर गई है तो यीशु के जी उठने की मूल सच्चाई से आपके विश्वास को सहारा देने से फिर से जीवित की जा सकती है। पतरस ने लिखा कि ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिसने *यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा,* अपनी बड़ी दया से हमें *जीवित आशा* के लिए नया जन्म दिया'' (1 पतरस 1:3)।

जी उठने के विश्वास करने के अनेक कारण दिए गए हैं: खाली कब्र की सच्चाई; यीशु के अविश्वासी चेलों के मनों और जीवनों में होने वाले नाटकीय परिवर्तन, अनिन्दनीय गवाहों की गवाही।[33] पाठ के लिए पवित्र शास्त्र के संदर्भ में आयत 34 के विजयी शब्दों ''प्रभु सचमुच जी उठा है'' को कहने के कई कारण हैं।

परन्तु जैसे रोटी के बारे में जान लेने से ही आपकी भूख नहीं मिट सकती और पानी के बारे में जान लेने से ही आपकी प्यास नहीं बुझ सकती, वैसे ही प्रभु के जी उठने के बारे में जानकर ही आपकी आशा नहीं जग सकती। विश्वास करके उस विश्वास को व्यक्त करना आवश्यक है; पहले पानी की कब्र में उसके साथ जी उठकर और फिर नये जीवन में प्रतिदिन उसके साथ चलकर (रोमियों 6:3-6)।

जब क्लियोपास और उसका साथी अपने घर में यीशु के साथ बैठे थे तो लगा था कि एक साधारण घर में साधारण भोजन हो रहा है। फिर कुछ अद्‌भुत बात हुई। आपको यह दिन साधारण दिन लग सकता है; परन्तु यदि आप प्रभु की इच्छा के सामने अपनी इच्छा सौंप देते हैं तो यह एक असाधारण दिन बन सकता है![34]

टिप्पणियां

[1]इस पाठ की रूप रेखा के लिए देखें ''लूका: मसीह, मनुष्य का पुत्र।'' [2]KJV में ''trusted'' है, परन्तु मूल लेख में ''आशा'' के लिए शब्द है। [3]सुसमाचार के अन्य वृत्तांतों में बताया गया है कि इम्माउस के मार्ग पर जाने वाले इन यात्रियों को दर्शन देने से पहले यीशु मरियम मगदलीनी तथा अन्य दो स्त्रियों से मिल चुका था। सुसमाचार के चारों वृत्तांत एक-दूसरे के पूरक हैं। यीशु के जी उठने के बाद दिखाई देने की पूरी कहानी के लिए, चारों वृत्तांतों को मिलाना आवश्यक है। [4]हमें क्लियोपास के बारे में अधिक कुछ पता नहीं है। एक परम्परा से सुझाव मिलता है कि क्लियोपास यूसुफ का भाई था, यानी सांसारिक तौर पर यीशु का ताया, परन्तु इसे साबित करने के लिए इससे अधिक जानकारी नहीं है। [5]एक प्राचीन परम्परा के अनुसार वह अनाम चेला था, परन्तु ''*हमारे* सरदारों'' (आयत 20) से संकेत मिलता है कि दोनों यहूदी थे (लूका शायद यूनानी था)। कइयों का कहना कि वह अनाम चेला पतरस था, परन्तु आयत 34 इस सम्भावना को नकारती प्रतीत होती है, अनाम चेलों को आमतौर पर पुरुष के रूप में चित्रित किया जाता है और NASB

में आयत 25 में ''foolish men'' है, परन्तु ''men'' शब्द अनुवादों द्वारा जोड़ा गया है। इस वाक्यांश का अनुवाद ''मूर्ख'' भी हो सकता था। आयत 29 में संकेत मिलता है कि वे एक ही घर में रहते थे, इसलिए ''क्लियोपास की पत्नी'' का अनुमान तर्कसंगत है। [6]कहानी की 28 और 29 आयतों से पता चलता है कि उनका घर इम्माउस नगर में था। [7]हम पक्का नहीं जानते कि इम्माउस कहां था। अधिकतर विद्वानों का मत है कि यह यरूशलेम के पश्चिम में या उत्तर पचिश्म में था। आज पर्यटकों को एक परम्परागत जगह दिखाई जाती है, परन्तु यह यरूशलेम से सात नहीं उन्नीस मील है। [8]मुझे नई-नई जगहें देखना और अलग-अलग काम करना अच्छा लगता है, परन्तु घर से दूर रह कर मैं कभी भी आराम महसूस नहीं करता। मैं न केवल दिन ही गिनता हूं, बल्कि यह भी गिनता हूं कि क्या-क्या काम कर लिया है: ''इस बिस्तर पर तीन और रातें काटनी हैं, बस चार बार और दाढ़ी बनानी है।'' अन्त में घर को जाते हुए मैं नगरों को गिनता हूं: ''एक और नगर रह गया, बस अढ़ाई घण्टे और लगेंगे!'' [9]आयत 17 कहती है कि वे ''उदास'' लग रहे थे। NIV में यहां ''their faces [were] downcast'' है। [10]KJV में यहां मूल लेख की झलक है। अन्य अनुवादों में ''उन्हें उसे पहचानने से रोका गया'' (NIV); ''उनकी आंखों को उसे पहचानने से रोका गया'' (RSV) है।

[11]इस कहानी में आगे, अन्त में यीशु जब सब चेलों को दर्शन देता है, तो पहले तो उन्हें लगता है कि यह कोई भूत है (लूका 24:36)। [12]मत्ती 12:38-40; यूहन्ना 2:19-21; आदि। [13]शायद इन तथा अन्य तथ्यों के *मेल* ने उन्हें यीशु को पहचानने से रोके रखा। [14]उस समय और भी लोगों के नाम ''यीशु'' थे (याद रखें कि ''यीशु'' ''यहोशुआ'' का यूनानी रूप है)। क्लियोपास ने ''यीशु नासरी'' कहकर इस ''अजनबी मुसाफिर'' को यीशु का परिचय दिया (KJV, NIV, RSV)। [15]लगता नहीं है कि कोई यहूदी और पिलातुस दूसरे रोमी अधिकारियों को ''हमारे सरदार'' कहे। स्पष्ट है कि क्रूस दिए जाने में रोमियों के और उनके योगदान का उल्लेख नहीं है। आज ऐसी बात को ''यहूदी विरोधी'' कहा जा सकता है, परन्तु यह एक यहूदी द्वारा ही कहा गया था। किसी भी समाज के लोगों के प्रति पक्षपात और दुर्भावना को कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता, परन्तु बाइबल यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने का दोष यहूदियों और उनके अगुओं के कंधों पर डालती है (प्रेरितों 2:23)। [16]मत्ती 16:21; 17:23; आदि। [17]दोनों की बातों से हमें यीशु के ग्यारह चेलों में से कइयों के मन की उलझन की कुछ समझ आती है। [18]KJV में ''O fools'' है। [19]कॉटन पैच वर्ज़न। [20]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री आन लूक* (अबिलेन, टैक्सस: एसीयू प्रैस, 1975), 467.

[21]''ख्रिस्त'' इब्रानी शब्द ''मसीहा'' का यूनानी रूप है। दोनों का अर्थ ''अभिषिक्त'' है। [22]जवानों के ''डू लॉर्ड'' नामक गीत के शब्द इस प्रकार हैं, ''यदि आप अपना क्रूस नहीं उठाते, तो आप मुकुट भी नहीं पहन सकते।'' ''चंगाई और धन का सुसमाचार'' सुनने वाले यह सिखाते हैं कि परमेश्वर की विश्वासी संतान के लिए कभी कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए, परन्तु पौलुस ने कहा कि ''हमें *बड़े क्लेश* उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा'' (प्रेरितों 14:22)। [23]खोजे के हाथ में यशायाह की पुस्तक वाली पत्री (प्रेरितों 8) बहुत निराली थी, इस के लिए उसे काफी कीमत चुकानी पड़ी होगी। [24]मेरा मानना है कि लूका 2:52 तथा अन्य आयतों में यह सिखाया गया है कि यीशु ने पवित्र शास्त्र की आरम्भिक शिक्षा वैसे ही पाई थी जैसे हमें मिलती है यानी पढ़ कर। [25]सच तो यह है कि यदि उन्होंने उससे रोकने का आग्रह न किया होता तो हमें क्लियोपास के बारे में सुनने को मिलता! [26]यीशु उन्हीं के जीवन में आता है, जो उसकी इच्छा के आगे अपने आपको झुका देते हैं (मत्ती 7:21-23)। [27]बाइबल में यह निराला वाक्यांश आम तौर पर इस्तेमाल किया जाता है (2 राजाओं 6:17)। हम में से कइयों को आंखें खोलना आवश्यक है! [28]कॉटन पैच वर्ज़न में ''it dawned on them'' है। [29]KJV में ''he *opened* to us the scriptures'' है। [30]''ग्यारह'' शब्द का इस्तेमाल कई बार यूहन्ना की जगह भरने तक और उनके फिर से ''बारह'' होने से पहले प्रेरितों के लिए किया जाता था। मैंने इसका उल्लेख इसलिए किया है क्योंकि मेल खाली आयतों से हमें पता चलता है कि सामूहिक तौर पर प्रेरितों को पहली बार यीशु के दिखाई देने के समय थोमा उनके साथ नहीं था।

[31]इस दर्शन का विवरण हमारे पास नहीं है, परन्तु पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:5 में इसका हवाला दिया है। यह बाइबल की उन कुछ अनकही कहानियों में से एक है: उनके लिए विशेष दर्शन जिन्होंने उसका इनकार किया था! [32]आयत 35 में यूनानी शब्द अनुवाद ''पहचाना'' ''जानते'' के लिए शब्द का रूप है (देखें KJV)। [33]प्रभु इम्माऊस के मार्ग में चेलों को दिखाई देने की तरह हमें निजी तौर पर दिखाई नहीं देगा, परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई बातें वही काम करती हैं (यूहन्ना 20:30, 31)। [34]एक प्रवचन में, मैंने लिखा है, ''साधारण प्रचारक वाली इस साधारण बिल्डिंग में साधारण रविवार लग सकता है ... परन्तु यदि आप अपनी इच्छा प्रभु को सौंप दें तो आपके लिए यह असाधारण या गैर मामूली बन सकता है!''